अध्ययन सामग्री
विषय- हिन्दी
सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर
प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)
रामभक्ति साहित्य की सामान्य विशेषताएँ
पदनाम- डॉ स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एच डी जैन कॉलेज, आरा
12:27 ✓✓

Scanned with CamScanner

३इ. ३ रामभक्ति साहित्य की सामान्य विशेषताएँ

भक्तिकाल में भक्ति की अनेक धाराएँ प्रचलित थी । कबीर की निर्गुण ज्ञानमार्गी शाखा और सूफियों की प्रेमपूर्ण भक्ति इसी काल में प्रवाहित रही । ये दोनों शाखाएँ निराकार निर्गुण ब्रम्ह का प्रचार–प्रसार करती हैं । इनके अतिरिक्त सगुण भक्तिधारा भी प्रवाहित रही। सगुण भक्तिधारा में ईश्वर के रुप में राम और कृष्ण माने गये । रामभक्ति के मुख्य प्रवर्तक रामानुजाचार्य और बाद में रामानन्द माने जाते हैं । इन्हों ने राम के सगुण और निर्गुण दोनों रुपों की उपासना का विधान किया । तुलसी ने दास्यभाव की भक्ति की प्रतिमा कर रामभक्ति को एक निश्चित दिशा की ओर उन्मुख कर दिया था । रामभक्ति शाखा के अनेक कवि हुए, किन्तु रामभक्ति काव्य धारा का साहित्यिक महत्व महाकाव्य तुलसीदास के कारण है । उनके ही काव्य की प्रवृत्तियाँ राम काव्य की प्रवृत्तियाँ है । उनका विवेचन निम्न प्रकार हैं ।

राम का स्वरूप

रामभक्त कवियों के उपास्यदेव भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम है। वे परब्रम्ह स्वरुप है। राम पाप का नाश करने हेतु और धर्मोध्दार के लिए युग में अवतीर्ण होते है। राम विष्णु का अवतार है और भक्त कवि मानव रुप में उनका साधक हैं।

रामभक्ति के अनुरुप श्रीराम में शील, शक्ति और सौन्दर्य का समन्वय है। अपनी शक्ति से वे दुष्टोंका खात्मा करते हैं और भक्तों को संकटों से मुक्त करते है। वे अपनी करुणामयता से पतितों और अधर्मो का उध्दार करते हैं। इस प्रकार भगवान श्री राम का लोकरक्षक रुप प्रधान है। वे आदर्श के प्रतिष्ठापक है, यही कारण हो सकता है, भगवान राम–सीता के नाम पर प्रेम का चित्रण नहीं हुआ है। कालांतर में राम भक्ति परम्परा में रसिकता का उदय हुआ और उस में सखी सम्प्रदाय की स्थापना हुई परन्तु यह सब कृष्ण भक्ति साहित्य के अनुकरण पर ही हुआ।

समन्वयात्मकता

सगुण भक्तिधारा के राम काव्य का स्वरुप अधिक व्यापक है। राम काव्य में एक विराट समन्वय की भावना है। इस में न केवल राम की उपासना है बल्कि कृष्ण, शिव, गणेश आदि देवताओं की स्तुति की गई हैं। यह काव्य हिन्दु धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों का समन्वय करने का सफल प्रयास करता है। महा कवि तुलसीदास ने सेतुबन्ध के अवसर पर श्रीराम द्वार शिवजी की पूजा करवाई है –

'शिव द्रोही मम दास कहावा।
सोर नर मोहि सपनेहु नहीं भावा।।'

Scanned with CamScanner

यद्यपि रामभक्ति काव्य में राम भक्ति को श्रेष्ठ माना है तो भी उसकी भक्ति भावना अत्यंत उदार है। राम भक्तों ने भक्ति को सुसाध्य माना है फिर भी उन्होंने ज्ञान, भक्ति और कर्म के बीच समन्वय स्थापित करने का सुंदर प्रयास किया है। इस काव्य में सगुणवाद तथा निर्गुणवाद में एकरुपता बताई गई है। राम भक्तों का अपराध्य सगुण भी है और निर्गुण भी तो भी भगवान का सगुण रुप भक्तिसुलभ है।

लोकसंग्रह की भावना

राम काव्य लोक कल्याण की भावना की दृष्टि से भी यह साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। जन साधारण के लिए यह अत्यंत निकट का महसूस होता है। इन्होंने गृहस्थ जीवन की उपेक्षा नहीं की हैं। राम और सीता के माध्यम से जीवन स्तर को उँचा उठाने का प्रयास किया है। राम काव्य का आदर्श पक्ष अत्यंत उच्च है। भगवान श्रीराम आदर्श पुत्र है। आदर्श राजा भी है। सीता आदर्श पत्नी है, कौशल्या आदर्श माता है, लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई हैं, हनुमान आदर्श सेवक है और सुग्रीव आदर्श सखा हैं। राम काव्य में जीवन का मूल्यांकन आचार व्यवहार की कसौटी पर किया गया है। स्वंय भगवान श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम है। आदर्श की प्रतिष्ठा उनकी अथ और इति है।

भक्ति का स्वरुप

राम भक्त कवियों ने भक्ति के स्वरुप पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इनके अनुसार भगवान राम का चरित्र त्रिलोकातिशायी है। राम भक्त कवि राम के शील, शक्ति और सौन्दर्य पर मुग्ध है। यहीं कारण है कि राम भक्त कवियों नें अपने और राम के बीच सेवक–सेव्य भाव को स्वीकार किया है । तुलसी के अनुसार –

'सेवक सेव्य भाव बिनु, भव ने तरिच उरगारि।'

राम भक्त कवियों का भक्ति संबंधी दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक उदार है। इन कवियों ने राम भक्ति के साथ–साथ अन्य देवी–देवताओं की भी स्तुति की गई है। रामभक्त कवि ज्ञान और कर्म की अलग–अलग महत्व स्वीकार करते हैं। रामभक्त कवियों की भक्ति में नवधा भक्ति के सभी अंगो का विधान है। ये भक्त कवि विशिष्ट द्वैतवाद से प्रभावित है। इस भक्ति –प्रणाली में जीव भी सत्य है – क्यों कि वह ब्रम्हा का अंश है।

पात्र तथा चरित्र चित्रण

राम काव्य के पात्र आचार और लोक मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इनका चरित्र महान एवं अनुकरणीय है। इनमें जीवन की सभी कृतियों का चित्रण किया गया है अतः इनमें सर्वांगिणता है। राम काव्य में रज, तम और सत तीनों गुणों की अभिव्यक्ति हुई है। राम की रावण पर विजय अर्थात सत् की तम पर विजय है। तुलसी के काव्य में राम नाना रुप में लीला करते हुए पूर्ण ब्रम्ह है। महाकवि तुलसीदास के काव्य में राम नाना रुप में लीला कर रहें है। निर्गुण संतो में राम ऐतिहासिक न होकर ब्रम्ह है, किन्तु सगुण भक्ति काव्य में ऐतिहासिक होते हुए भी कालातीत है ।

Scanned with CamScanner

काव्यशैली

सगुण रामभक्ति परम्परा के कवि या तो स्वयं विद्वान थे अथवा विद्वानों की संगति से साहित्य के धर्मों के संबंधों में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर चुके थे। इनके द्वारा अलंकार शास्त्र की अवहेलना हुई है। इनका अनेक काव्य शैलियों पर अधिकार था। यही कारण है कि राम काव्य में सभी शैलियों की रचनाएँ मिलती हैं। इस में प्रबन्ध और मुक्तक, दोनों की काव्यरुपोंका प्रयोग किया गया है। रामचरित मानस में महाकाव्य, पार्वतीमंगल व जानकी मंगल में खन्डकाव्य, कवितावली व दोहावली में मुक्तक, विनय पत्रिका में प्रबन्ध मुक्त का मिश्रण, रामललानहछु में गीति काव्य के प्रायः सभी तत्व विद्यमान है ।

रुपोपासना

सगुण भक्ति पध्दति में रुपोपासना का विशिष्ठ स्थान है। आदि शंकराचार्य ने नाम और रुप को माया जन्म माना है। शतपथ ब्राम्हण में ब्रम्ह को अरुप और अनाम कहा गया है, परंतु सगुण साधना में भगवान के नाम और रुप आनंद की अक्षय निधि है। नाम और रुप ही भक्ति का आरम्भ माना गया है। रामभक्त को भगवान का नाम और रुप इतना विमुग्ध कर लेता है, कि लौकिक छवि उसमें बाधक नहीं बन सकती। आरंभ में सगुण उपासक नामरुप युक्त मूर्ति समक्ष आकर उपासना करता है, परन्तु निरंतर भावना, चिंतन एवं गुण किर्तनसे वह अपने आराध्य में ऐसा सनिविष्ट हो जाता है, कि उसे किसी भौतिक उपकरण की आवश्यकता ही नही रहती।

गुरु की महिमा

रामभक्ति शाखामें निर्गुण संत कवियों के समान सगुण कवियों ने भी गुरु की महिमा गाई है । राम भक्ति के अनुरुप गुरु ब्रम्ह का प्रतिनिधी है । महाकवि तुलसीदास के मतानुसार गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति असंभव है और ज्ञान के अभाव में मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती ।

रस

राम भक्ति साहित्य में रामकथा अत्यंत व्यापक है । उसमें जीवन की विविधताओं का सहज सन्निवेश है । उसमें सभी रसों का समावेश है किन्तु सेवक–सेव्यभाव की भक्ति होने के कारण निर्वेदजन्य शान्त रस की प्रधानता है । राम मर्यादा पुरुषोत्तम है और भक्त कवि भी मर्यादावादी है । होने के कारण श्रृंगार रस का चित्रण सिमित हुआ है । महाकवि तुलसीदास में सभी रसों का सुंदर परिपाक हुआ है । उनके काव्य में श्रृंगार और शांति रस के साथ साथ वीर रस का भी प्रभावी निरुपण हुआ है । विभिन्न युध्द दृश्य चित्रण में वीर रसके साथ ही रौद्र, करुण, भयानक और कहीं कहीं बीभत्स रस की निष्पत्ति हुई है । नारद मोहके प्रसंग में हास्य रस का प्रसंग चित्रित हुआ है । अनेक स्थलों पर अद्‌भूत रस का निरुपण हुआ है ।

Scanned with CamScanner

छंद

रामकाव्य में रचना भेद, भाषा भेद, विचार भेद, अलंकार भेद के साथ-साथ छन्द भेद भी पाया जाता है। वीर गाथाओं के छप्पय, सन्त काव्य के दोहे, प्रेम काव्य के दोहे, चौपाई और इनके अतिरिक्त कुन्डलिया, सोरठा, सवैया, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी आदि छंद प्रयुक्त हुए हैं। राम काव्य में मुख्यतः दोहा,चौपाई का प्रयोग हुआ है। तुलसीदासजी ने इनका प्रयोग अधिकारपूर्वक किया है।

अलंकार

रामभक्त कवि पंडित होने हेतु उन्होंनें अलंकार शास्त्र की अवहेलना नहीं की हैं। जहाँ इन कवियों नें विविध छंदो का प्रयोग बडी कुशलता से किया हैं वहाँ अलंकार के प्रयोग में अत्यंत विद्‌ग्धता प्रदर्शित की है। कवि केशव नें बडी मात्रा में शब्दालंकारों का प्रयोग किया है। तुलसी काव्य में सभी अलंकार मिलते हैं किन्तु वें उपमा और रुपक के लिए विशेष प्रसिध्द हैं।

भाषा

रामकाव्य की भाषा अवधी हैं। कवि केशव ने अपनी रचना राम-चन्द्रिका में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। बाद के रसिक सम्प्रदाय के कवियों ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। तुलसीदास मे अपनी रचनाओं में अवधी तथा ब्रज दोनों भाषाओं का सफल प्रयोग किया है। राम काव्य में भोजपुरी, बुन्देलखन्डी, राजस्थानी, संस्कृत और फारसी भाषाओं के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। तुलसी ने भाषा का परिस्कृत रुप प्रस्तुत किया हैं।

संक्षेप में उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता हैं, कि रामभक्ति शाखा के कवियों ने समय, परिस्थिती और काल के अनुरुप अपना काव्य सृजन किया हैं। इन कवियों ने उत्कृष्ट काव्य सृजन का परिचय दिया हैं। कविता इनकी साध्य नहीं साधन हैं। इनका साध्य रामभक्त हैं। अपने साध्य तक पहुँचने के लिए इन कवियों ने जिस साधन को स्वीकार किया हैं उसे इतना समर्थ और पूर्ण बना दिया हैं, उसका मानस जनमानस हो गया। इस काव्य में मानव जीवन की विविध दशाओं का सहज, सरल, स्वाभाविक और प्रभावी चित्रण हुआ हैं। इन कवियों ने एक ओर धर्मरक्षा, लोक हित एवं समाज के उत्थान में योग दिया हैं तो दूसरी ओर काव्य को उदात्त, उत्कृष्ठ एवं लोक मंगलकारी रुप प्रदान करने का स्तुत्य कार्य किया हैं।

Scanned with CamScanner